अध्याय–10

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र छिंदवाड़ा

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाड़ा 30 मार्च, 1995 को अस्तित्व में आया और 3 जनवरी, 1996 से इसे भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के अधीन उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के सैटेलाइट केन्द्र के रूप में घोषित किया गया। इस केन्द्र को जैवविविधता संरक्षण, अकाष्ठ वन उपज, वन रक्षण, सामाजिक–आर्थिक, वन संवर्धन और वृक्ष सुधार जैसे विशेषीकृत क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान करने का अधिदेश मिला है। इसके अलावा, इस केन्द्र को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने वानिकी· सेक्टर में मानव संसाधन का विकास करने का कार्य भी सौंपा गया है ताकि स्व–रोजगार द्वारा निर्धनता में कमी लाई जा सके।

वर्ष 2004–2005 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

कोई नहीं

वर्ष 2004–2005 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1: प्राकृतिक वनों एवं रोपणों में बीच की फसल के रूप में औषधीय एवं सुरभित पादपों की खेती की व्यवहार्यता पर अध्ययन और इनकी पादप रासायनिक जांच [049/ सी.एफ.आर.एच.आर. डी.–1(2)(2001–2002)]

स्थिति : एन्ड्रोग्रेफिस पेनिंकूलाटा (कालमेघ), एस्पेरेगस रेसीमोसस (सतावर), रावोल्फिया सर्पेन्टाइना (सर्पगंधा) और कोस्टस स्पीसिओसा (केवकंद) को विभिन्न अन्तरालों पर रोपित किया गया और उत्पादकता पर परिणामों को अभिलिखित किया। प्राकृतिक वनों में बीच की फसल के रूप में कालमेघ, लेमन घास और ग्वारपाठा के प्रदर्शन को प्रेक्षित किया।

मध्य भारत के सतपुड़ा पठार क्षेत्र के लिए विथानिया सोम्निफेरा (अश्वगंधा) की खेती तकनीक को मानकीकृत किया।

मध्य भारत में क्लोरोफाइटम बोरिविलिएनम (सफेद मूसली) की खेती के लिए खेती तकनीक को विकसित किया। फसल को वृक्ष प्रजातियों के साथ बीच की फसल के रूप में उगाया जा सकता है।

कालमेघ (एन्ड्रोग्रेफिस पेनिकूलाटा) की उत्पादकता और गुणवत्ता पर फसल कटान समय के प्रभाव का अध्ययन किया गया। फसल कटान समय प्रमुख सक्रिय घटक एन्ड्रोग्रेफोलिडी के सन्दर्भ में जड़ी बूटी की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

परियोजना 2: कृषि वानिकी और रोपण पारितंत्रों में एम्ब्लिका आफिसिनेलिस और मेलाइना आर्बोरीया के नाशिकीटों पर अध्ययन [2–050/सी.एफ.आर.एच. आर.डी.–2(3)/2001–2002]

स्थिति : एम्ब्लिका ऑफिसिनेलिस और मेलाइना आर्बोरीया में 14 नाशिकीट अभिलिखित किए। मेलाइना आर्बोरीया के नाशीजीव के रूप में नए निष्पत्रक परासा लीपिडा और ट्राइपेन्फोरा सेमिहाइलिना और एम्ब्लिका ऑफिसिनेलिस के फलों पर रसचूषक सीकूटीलर्स नोबिलिस को पहली बार सूचित किया गया।

कीट रोग काम्प्लेक्स के कारण मेलाइना आर्बोरीया रोपण का मरना

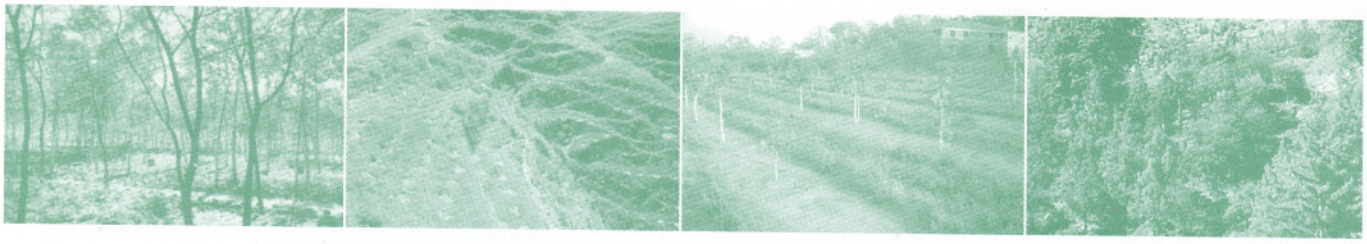

गाल बनाने वाले कीटों बीटूसा स्टाइलोफोरा, चकया के विरूद्व एम्ब्लिका ऑफिसिनेलिस की पांच किस्मों की जांच की गई इसके बाद कन्चन किस्मों पर ज्यादा नाशीजीव पाए गए।

नाशीजीव के स्तर के मानीटरन के लिए पश्चिमी महाराष्ट्र में मिलाइना आर्बोरीया के विभिन्न आयु समूह रोपणों का मूल्यांकन किया। सम्भावित नियंत्रण उपायों का सुझाव भी दिया गया।

मेलाइना आर्बोरीया पर छाल भक्षक इल्ली, इन्डरबेला क्वाड्रिलोटाटा द्वारा विभिन्न राष्ट्रीय उद्गमस्थल और रोपण में उगाए पौधों (आर टी, पी बी, पी टी व आर एस) के प्रतिरोध के प्रभाव एंव आधार का अध्ययन किया।

परियोजना 3: बुकानेनिया लेंजन स्पेरेंग (एचार अथवा चिरोंजी) की पौधशाला तकनीकों और प्रवर्धन विधियों का मानकीकरण [051/सी.एफ.आर.एच.आर.डी.–(2001–2002)]

स्थिति : बुकानेनिया लेंजन के अंकुरण और पौध वृद्धि पर आई. ए.ए, आई.बी.ए. और जीए$_3$ के प्रभाव के अध्ययनों ने बुकानेनिया लेंजन के अंकुरण पर जीए$_3$ का महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाया।

उच्च निवेश बुकानेनिया लेंजन रोपण

बुकानेनिया लेंजन के पौधों को उगाने के लिए अकार्बनिक उर्वरकों की मात्राओं को अनुकुलतम बनाने के लिए पौधशाला में प्रयोग तैयार किए गए।

परियोज़ना 4: गेनोडर्मा टेसीया की लाकेटी स्टिपिटाटी प्रजाति की खेती तकनीक का मानकीकरण और उपयोग [056/सी.एफ.आर.एच.आर.डी.–2(6)/2003]

स्थिति : छत्तीसगढ, मध्य प्रदेश की विभिन्न जलवायवीय किस्म के अनेकों पारिस्थिकीय क्षेत्रों से 26 प्रजातियों पर जी. लूसिडम की फल काया एकत्र की गई। जी. लूसिडम को काष्ठ चिप्स और काष्ठीय लट्ठों पर कृत्रिम रूप से उगाया गया। एकत्रित फल काया से संवर्ध को पृथक एवं शोधित किया गया।

परियोजना 5: मध्य प्रदेश की उष्णकटिबंधीय जलवायु के तहत कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पादपों की उत्पादन प्रौद्योगिकी का मानकीकरण [055/सी.एफ.आर.एच.आर.डी.–5/(एम.एच.एफ.डब्ल्यू)/2003]

स्थिति : स्थायित्व और अनुकूलनशीलता का परीक्षण करने के बाद एम्ब्लिका आफिसिनेलिस (आंवला) और एन्ड्रोग्रेफिस पेनिकूलाटा (कालमेघ) के पौधे, जीम्नीमा सील्वीस्ट्रिस (गुडमार) और टिनोस्पोरा कार्डिफोलिया (गिलोय) की कलम और रावोल्फिया सर्पेन्टाइना (सर्पगंधा) के बीज किसानों/वृक्ष उत्पादकों में वितरित किए गए।

वर्ष 2004–2005 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1 : कुछ भारतीय बांस प्ररोहों की खाद्य क्षमता पर अध्ययन।

स्थिति : यह परियोजना मार्च, 2005 में शुरू की गई है।

शिक्षा और प्रशिक्षण

प्रशिक्षण

वानिकी अनुसंधान और मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाडा में कृषि वानिकी से लेकर औषधीय पादपों की खेती एवं जैव उर्वरकों तक विभिन्न विषयों पर छः प्रशिक्षण कार्यक्रम

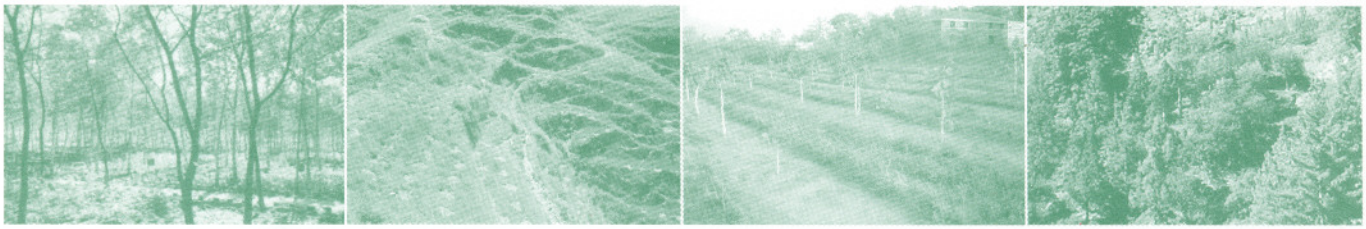

आयोजित किए गए। प्रशिक्षण में आस–पास के जिलों के जिला पंचायत कर्मचारियों, राज्य वन विभागों और प्रगतिशील किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

प्रकाशन

प्रकाशित बुलेटिन

1. मेशराम, पी.बी. और पात्रा, ए.के. (2004) : आंवले की खेती एवं उससे लाभ। 109 आई.सी.एफ.आर.ई, बी.एल.–14 / सी. एफ.आर.एच.आर.डी., बी.एल., 5, 14 : पी.पी. ।

2. विजय राघवन, ए. और पात्रा, ए.के. (2004) : औषधीय पादपों की खेती–घृतकुमारी (ग्वारपाठा) 108 आई.सी. एफ.आर.ई., वी.एल.–13 / सी.एफ.आर.एच.आर.डी., बी. एल.–4, 8, पी.पी.।

3. नन्देश्वर, डी.एल. और पात्रा, ए.के. (2004): चिरौंजी एक बहुपयोगी पौधा–110, आई.सी.एफ.आर.ई.– 151 सी. एफ.आर.एच.आर.डी., बी.एल.–4, 9, पी.पी.।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमीनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनी

डा. पी.बी. मेशराम, वैज्ञानिक–डी और श्री ए. विजयराघवन, वैज्ञानिक–बी ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में 22 से 25 नवम्बर, 2004 तक आयोजित "उष्णकटिबंधी में बहुद्देशीय वृक्षः मूल्यांकन, वृद्धि और प्रबन्ध" पर यूफरो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और शोधपत्र प्रस्तुत किया।